सच्ची वाणी

कोयल काको देत है, कागो कासो लेत ।
तुलसी मीठे वचन से, जग अपनो कर लेत ।।
तुलसी मीठे वचन ते, सुख उपजत चहुँ ओर ।
वशीकरण यह मंत्र है, तज दे वचन कठोर ।। —तुलसीदास

1. वाणी चार प्रकार की होती है— 1. वैखरी—जो मुँह से बोली और कानों से सुनी जाती है जिसे शब्द कहते हैं । 2. मध्यमा—जो संकेतों से, मुखाकृति से, भाव भंगिमा से और आँखों से कही जाती है । 3. पश्यती—जो मन से निकलती है और मन ही उसे सुन सकता है । उसको विचार कहते हैं । 4. परा—यह इच्छा, निश्चय, प्रेरणा, शाप, वरदान आदि के रूप में अंतःकरण से निकलती है । इसको संकल्प कहते हैं । वस्तुतः वाणी एवं पाणि मानव को जानवरों से अलग करती है क्योंकि जानवरों के पास न वाणी होती है और न हाथ ।

2. जिस क्षेत्र में व्यक्ति की रुचि होती है, उसमें उसे कड़ी मेहनत करने पर भी थकान नहीं होती । अपितु रुचिकर, क्षेत्र होने के कारण उसे काम करने में आनन्द का अनुभव होता है और मन में नये-नये आविष्कार करने की अभिलाषा बनी रहती है ।

3. संतोष के समान कोई सुख नहीं । मन की शांति सब से बड़ा सुख है । यदि मन अशांत हो जाये तो महल भी व्यर्थ है । जो व्यक्ति और-और कहेगा वह कभी भी शांत नहीं हो सकता और इसके विपरीत जो व्यक्ति बस-बस कहेगा वही शांत है ।

4. मुस्कुराहट संसार का सब से बड़ा आमंत्रित कार्ड है । जानवर कभी नहीं हँसते हैं । हँसने का वरदान केवल व्यक्ति को ही मिला है । हँसना भक्ति है, मुस्कराना मुक्ति है, खिलखिलाना जप है

और दूसरों को हँसाना तप है । जहाँ हँसी होती है वहाँ पर लड़ाई नहीं होती है अतः हमें सब के साथ हँसना चाहिये । परन्तु किसी पर भी नहीं हँसना चाहिये । एक हिन्दी कवि के शब्दों में–

पल भर के लिये मुस्कुराओगे तो तस्वीर अच्छी होगी ।
ज़िन्दगी भर मुस्कुराओगे तो तक़दीर अच्छी होगी । ।

5. हमें परोपकार के कार्य करने से कभी पीछे नहीं हटना चाहिये । हम तो उस महान् देश भारत की परम्परा के निवासी हैं जहाँ राजा शिवि ने कबूतर को बचाने के लिये बाज को अपना मांस दे दिया और महर्षि दधीचि ने असुरों के अत्याचार से बचने के लिये और उनके वध के लिए आवश्यक वज्र के निर्माण के लिये अपने शरीर की हड्डियाँ दान दे दी थी ।

6. अहंकार, क्रोध, आलस्य, नशा, रोग आदि ज्ञान प्राप्ति में मुख्य बाधाएं हैं । इसके अतिरिक्त व्यक्ति लोभ, क्रोध, भय, मज़ाक आदि के कारण ही मुख्यतः झूठ बोलता है ।

7. धनोपार्जन ख्याति के लिये जो हम उचित एवं अनुचित कार्य करते हैं वह परिश्रम कहलाता है । जैसे कोई व्यक्ति नौकरी करता हे, कोई व्यापार करता है, कोई चोरी करता है और कोई डाका डालता है आदि । इसके विपरीत प्रभु आज्ञा में रहकर आत्मोन्नति के लिये जो कार्य किया जाता है वह पुरुषार्थ कहलाता है जैसे स्वाध्याय, सत्संग, सेवा आदि ।

8. मुख्यतः पाँच तत्त्व व्यक्ति के दृष्टिकोण का निर्माण करते हैं । 1. पूर्व जन्म के संस्कार, 2. वंशानुक्रम, 3. वातावरण, 4. अनुभव और 5. शिक्षा ।

9. सम्मान का स्रोत सम्पत्ति और वैभाव नहीं अपितु उच्च चरित्र होता है । धन और वैभव भी चरित्र से चमकते हैं और सुख का कारण बनते हैं । वे जन धन्य हैं जो अपने सद्गुणों, विद्वता, कर्म-

परायणता और जनहित से अपने को चमकाते हैं और अपने पीछे अपनी ऐसी स्मृति छोड़ जाते हैं जो युग-युगांतर तक लोगों को श्रेष्ठ प्रेरणाएँ प्रदान करती रहती हैं। इतिहास ऐसे महापुरुषों के उज्ज्वल चरित्र से जाज्वल्यमान है। जैसे रामधारी सिंह दिनकर लिखते हैं–

बड़े वंश से क्या होता है, खोटे हो यदि काम।
नर का गुण उज्ज्वल चरित्र है, नहीं धन धाम।। –रश्मिरथी

10. संसार में सबसे भाग्यशाली व्यक्ति वही है जिसके जीवन में आनन्द है। भाग्यशाली व्यक्ति क्या धनी है? वह कैसे भाग्यशाली हो सकता है? क्योंकि धन से अनेक चिन्ताओं का उद्‌गम होता है। धन में बुराई नहीं परन्तु इसके दुरुपयोग में बुराई है। यदि आप इसका सदुपयोग करते हैं तो आप इसके स्वामी बन जाते हैं। यदि आप इसका दुरुपयोग करते हैं तो धन के आप दास बन जाते हैं। वह धनी व्यक्ति भाग्यशाली है जो धन का अनावश्यक संग्रह न करके इसको शुभ कार्यों में व्यय करता है। अतः एक उर्दूशायर के शब्दों में–

धन जोड़ जोड़ रखने से न भूख लगे न प्यास मिटे।
धन को शुभ कार्यों में लगाने से खुशियों की दौलत मिले।।

कोई कहता है कि भाग्यशाली वह है जिसकी संसार में प्रतिष्ठा है परन्तु नाम सब कुछ नहीं है। संसार में नाम को उज्ज्वल करने वालों को अंत में भिखारी होकर मरते देखा गया है। अतः एक उर्दूशायर के शब्दों में–

संसार में जो नर जन्म लिया करते हैं।
पर वे जन्म यहीं व्यर्थ किया करते हैं।।
जीना उनका है जो पर हेतु जीया करते हैं।
यो तो जमाने में सब लोग जीया करते हैं।।

परन्तु संसार में भाग्यशाली व्यक्ति वह है जो आत्मसमर्पण करके प्रभु का अनन्य भक्त बन जाता है। जैसे एक कवि ने सत्य ही लिखा है–

इनसान वही बड़भागी जिसे प्रभु से लगन लागी।।

11. शानदार ज़िन्दगी जीने के लिये दो ही तरीके हैं। जो आप को पसन्द है उस हासिल करें। नहीं तो जो आप को हासिल है उसे पसन्द करो। ऐसा करने से आपकी ज़िन्दगी की तस्वीर व तक़दीर बदल जायगी।

12. विवाह के समय पति-पत्नी में अत्यधिक प्रेम होता है। यदि जीवन भर ऐसा ही प्रेम बना रहे तो दम्पति का जीवन स्वर्ग बन जायेगा। विवाह के पहले 6 महीने तक पति बोलता और इसके 6 महीने बाद पत्नी बोलती है। एक वर्ष के बाद दोनों बोलते हैं और पड़ोसी सुनता है। जीवन को सुखी बनाने के लिए पति-पत्नी को दिमाग़ में आईस फैक्ट्री, जबान पर शुगर फैक्ट्री और दिल में लव फैक्ट्री लगानी चाहिये।

13. किसी भूखे व्यक्ति को भोजन खिलाकर फिर स्वयं भोजन खाने का मज़ा कुछ और ही होता है। स्वयं के लिये खाया गया भोजन कुछ समय पश्चात् गोबर बन जायेगा परन्तु किसी भूखे को खिलाया हुआ भोजन प्रभुप्रसाद बन जायेगा। जैसे कि वेद कहता है–

केवलाघो भवति केवलादी ऋग्वेद 10.117.6

अकेला खाने वाला पापी खाता है।

14. यह दुनियाँ गोल है। स्त्री चूहे से डरती है, चूहा बिल्ली से डरता है। बिल्ली कुत्ते से डरती है, कुत्ता शेर से डरता है। शेर आदमी से डरता है और आदमी स्त्री से डरता है। परन्तु सच्चा प्रभुभक्त किसी से भी नहीं डरता। जैसे स्वामी गीतानंद (वीर जी अम्बाला वाले) लिखते हैं–

अमर है आत्मा मेरी कज़ा से मैं नहीं डरता।
मेरे आमाल अच्छे हैं खुदा से मैं नहीं डरता।।

15. चूहे से अधिक शक्ति बिल्ली में होती है।
बिल्ली से अधिक शक्ति कुत्ते में होती है।।
कुत्ते से अधिक शक्ति शेर में होती है।
शेर से अधिक शक्ति हाथी में होती है।।

परन्तु हाथी से अधिक शक्ति व्यक्ति की सच्ची लगन में व सुदृढ़ संकल्प होती है।

16. अपनी बहू को इतना प्रेम करो कि आप की बहू पिहर का मोबाइल नं. भूल जाये और बहू अपनी सास को इतना सम्मान दे कि वह अपनी पुत्री का नाम भूल जाये। यदि आप पिता है तो अपने पुत्र को संस्कार दें। यदि आप पुत्र हैं तो ऐसे महान् कार्य करें कि संसार के लोग आपके माता-पिता को कहे कि आप का पुत्र बड़ा होनहार है। इस प्रकार आप का घर स्वर्ग बन जायेगा। अपनी दृष्टि को बदलो सृष्टि स्वयं बदल जायेगी।

17. प्रत्येक व्यक्ति के लिये चार बातें बहुत मुश्किल हैं– 1. मच्छर की मालिश करना, 2. चींटी का चुम्बन लेना, 3. हाथी को धक्का देना, 4. विवाह के पश्चात् मुस्कुराना। इसी प्रकार चार चीजें भी कभी नहीं टिकती है। 1. फक़ीर के हाथों में धन, 2. छालनी में पानी, 3. मानवमन, 4. साधु के पाँव।

18. प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन से 5 बातें 6 शब्द निकाल कर कचरे के डब्बे में फैंक देनी चाहिये तभी उसको जीवन में सफलता मिलेगी– 1. मेरी क़िस्मत खराब है, 2. यह काम मैं नहीं कर सकता हूँ, 3. मेरे पास समय नहीं है, 4. अभी मेरा मूड नहीं है, 5. लोग क्या कहेंगे? 1. परन्तु 2. किन्तु 3. अगर 4. मगर 5. लेकिन 6. तो ।

19. यदि किसी व्यक्ति के पास जितना है वह उतने में खुश नहीं है तो वह कभी भी खुश नहीं रह सकता । हमें संतोष रखना चाहिये और लोभ नहीं करना चाहिये । कहा भी जाता है कि संतोषी सदा सुखी लोभी सदा दुःखी और कहना चाहिये प्राप्त ही पर्याप्त है । यदि आप के पास 90 रुपये हैं तो उसी में संतुष्ट रहो और 99 के चक्कर में मत पड़े क्योंकि 99 का चक्कर कभी पूरा नहीं होता है । एक कवि के शब्दों में–

जीतना चाहते हो तो तृष्णा को जीतो ।
खाना चाहते हो तो क्रोध को खाओ । ।
पीना चाहते हो तो प्रभुनाम रस पियो । ।

20. जब दो भाई राज्य छोड़ते हैं तो वह रामायण बन जाती है । इसके विपरीत जब दो भाई राज्य के लिए लड़ते हैं तो वह महाभारत बन जाती है । परन्तु यदि भरत माता कैकेयी की बात मान लेते तो रामायण भी महाभारत बन जाती ।

21. रामायण के मुख्य अग्रलिखित तीन बिन्दु अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं–

(1) राम नाम – यह ऐसा नाम है कि किसी अपरिचित व्यक्ति को भी बोल देने से उससे परिचय हो जाता है ।

(2) राम का स्वभाव – जब श्रीराम को पता चला कि उन्हें 14 वर्ष का बनवास हो गया तो उन्होंने माता कैकेयी से कहा हे माता! पिता जी से वर मांगने की क्या आवश्यकता थी । यदि आप मुझे

14 वर्ष के लिये बनवास की आज्ञा दे देती तो भी मैं इसे सहर्ष स्वीकार कर लेता ।

(3) राम का चरित्र – श्री राम ने रामायण में कही भी उपदेश नहीं दिया और न किसी ग्रंथ की रचना की । उन का व्यक्तित्व इतना महान् था कि वही उपदेश बन गया । जैसे माता सीता ने विवाह के पश्चात् उन्हें कहा कि माता कौशल्या ने मुझे मुँह दिखाई में चूड़ामणि दिया है । आप क्या दोगे? श्री राम ने उत्तर दिया हे सीते! मैं आप को वचन देता हूँ कि मैं जीवन भर एक पत्नीव्रत धर्म का पालन करूँगा । यह बहुत बड़ी बात थी क्योंकि उस काल में कई राजाओं में बहुविवाह की कुप्रथा प्रचलित थी । ऐसा करके श्रीराम ने इस कुप्रथा का अंत कर दिया । वस्तुतः श्रीराम त्याग, तप, तपस्या की साक्षात प्रतिमूर्ति थे । वह वस्तुतः महापुरुष थे । इसी कारण उन्हें मर्यादा पुरुषोत्तम के नाम से पुकारा जाता है ।

22. महर्षि दयानन्द के गुरु स्वामी विरजानन्द थे । स्वामी विरजानंद के गुरु, स्वामी पूर्णानन्द थे और पूर्णानंद के गुरु स्वामी ओमानंद थे । ये चारों बाल ब्रह्मचारी थे और इन्होंने ब्रह्मचर्य से ही संन्यास धारण किया था । इसके अतिरिक्त महात्मा गांधी के गुरु गोपाल कृष्ण गोखले थे, गोपाल कृष्ण गोखले के गुरु राणाडे थे । राणाडे के प्रेरणास्रोत महर्षि दयानंद थे । यह वही राणाडे हैं जिन्होंने महर्षि दयानंद को पूना के प्रवचनों के लिये निमंत्रित किया था और महर्षि दयानंद ने वहाँ पर 15 प्रवचन दिये थे जो कि पुना प्रवचनों के नाम से प्रसिद्ध हैं ।

23. 'संस्कार क्या है?' जैसे भोजन बनाने से पहले कंकड़ मिट्टी चुनकर अन्न को साफ करते हैं, घी, हींग, जीरा आदि से संस्कार देकर उसे स्वादु, उत्तम, गुणकारी बनाते हैं, वैसे ही विभिन्न संस्कारों के द्वारा शरीर, मन एवं आत्मा के दोषों को निकाल कर

उसमें उत्तम गुणों का सिंचन कर श्रेष्ठ मानव बनाना ही संस्कार कहलाता है । जैसे महर्षि दयानंद लिखते हैं–

संस्कार क्यों करें ? जिनके द्वारा शरीर और आत्मा सुसंस्कृत होने से धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष प्राप्त हो सकते हैं और सन्तान अत्यंत योग्य होते हैं, इसलिये संस्कारों का करना सब मनुष्यों के लिये अति उचित है ।

वे माता-पिता बच्चों के बड़े शत्रु हैं जो अच्छी आदत डालने के लिए कठोर नहीं बनते हैं । बिगड़ने के साधन टी.वी. मोबाइल, कम्प्यूटर सब देते हैं परन्तु स्वाध्याय, सत्संग, साधना नहीं करवाते हैं इसलिये मुझे लिखना पड़ा–

संस्कारों से बड़ी कोई वसीयत नहीं होती ।
ईमानदारी से बड़ी कोई नसीहत नहीं होती । ।

24. केवल भक्ति से ही लक्ष्य की प्राप्ति हो सकती है । भक्ति के बिना और किसी भी साधन से भगवद्प्राप्ति नहीं हो सकती है । भक्ति कभी नहीं मरती है क्योंकि वह अमर है । कर्म स्वर्ग तक पहुँच कर स्वयं मर जाता है । ज्ञान आत्मज्ञान कराकर स्वयं मर जाता है । योग भी समाधि के पश्चात् स्वयं मर जाता है । भक्ति करने का सब को अधिकार है यदि कोई कितना बड़ा पापी क्यों न हो । जैसे पद्म पुराण में लिखा है–

भक्ति के सब अधिकारी हैं ।

परन्तु संसार के 99.99 प्रतिशत लोग मंदिरों, मस्जिदों, चर्चों, गुरुद्वारों में जाकर अपनी-अपनी पूर्ति के लिये मन्नतें मांगते हैं । यह प्रार्थना नहीं है । जब हम सांसारिक कामनाओं को छोड़ कर केवल प्रभु का धन्यवाद करते हैं तभी तो हमारी प्रार्थना आरम्भ होती है यही प्रभु की अनन्य भक्ति है । जैसे भक्त प्रह्लाद ने कहा था–

मैं आप से अनन्त काल तक कुछ न माँगूं ।

25. इन्सान घर बदलता है, दोस्त बदलता है, भोजन बदलता है, टी.वी.

बदलता है । लिवास बदलता है परन्तु फिर भी परेशान है क्योंकि वह स्वयं को नहीं बदलता । सामने वाला नहीं बदलेगा । आप को ही बदलना पड़ेगा । दो व्यक्ति कभी नहीं बदलते एक मूर्ख दूसरा मर्द । जैसे महावीर ने कहा है–

दूसरों को बदलने की कुचेष्टा सब से बड़ी हिंसा है ।

अतः एक कहावत है–

जिसने दुनियाँ को बदलने की कोशिश की वह हार गया और जिसने खुद को बदल लिया वह जीत गया ।

जैसे एक हिन्दी कवि के शब्दों में–

दुनियाँ को मत बदलने की कोशिश कर यार ।

तेरा मन विशाल है उसे सुधारने की कोशिश कर यार । ।

26. आप आप हो । आप जैसा दुनियाँ में कोई नहीं है । आपके अंगूठे में जो रेखाएँ हैं वे किसी अन्य व्यक्ति के अंगूठे में नहीं हैं । तभी अनपढ़ व्यक्ति का अंगूठा लगाते हैं और वसीयत पर तो पढ़े लिखे व्यक्ति का भी अंगूठा लगाते हैं । यहाँ तक कि आप की अक़्ल, शक्ल, नेचर, सिगनेचर आवाज़ भी किसी व्यक्ति से नहीं मिलते हैं क्येंकि आप अद्‌भुत-अद्वितीय हैं । अतः स्वयं की दूसरों से तुलना मत करो और न ही दूसरों जैसा बनने का प्रयास करो । फिर आप के 50% दुःख दूर हो जायेंगे ।

27. धन मानव जीवन के यापन करने का साधन है साध्य नहीं । जीवन में धन सब कुछ नहीं होता है । यदि धन सब कुछ होता तो कोई भी धनी कभी भी दुःखी नहीं होता, न ही बीमार होता, न ही प्रभु को प्यारा होता । परन्तु ऐसा नहीं है । धन जीवन में परमावश्यक है । अतः धन बहुत कुछ खरीदा जा सकता है परन्तु सब कुछ कभी भी नहीं खरीदा जा सकता है । जैसे धन से पाऊडर मिल सकता है, प्राकृतिक सौंदर्य नहीं, धन से पुस्तकें मिल करती हैं ज्ञान नहीं, धन से कलम मिल सकती है सुलेख नहीं, धन से

मंदिर मिल सकता है भगवान् नहीं, धन से नौकर मिल सकता है, सच्चा सेवक नहीं, धन से चित्र मिल सकता है चरित्र नहीं, धन से तोप मिल सकती है सन्तोष नहीं, धन से भोजन मिल सकता है भूख नहीं, धन से पलंग मिल सकता है नींद नहीं, धन से दवाइयाँ मिल सकती है ज़िन्दगी नहीं आदि । अतः कवि नरदेव ने सत्य ही लिखा है–

धन वालो ! क्यों करते हो अभिमान यहाँ ।
धन से नहीं मिलता है सब सामान यहाँ । ।

28. क्या किया जाए जिससे ऊपर वाला और नीचे वाला खुश हो जाये? ऊपर वाला प्रभु तभी खुश होता है यदि व्यक्ति प्रार्थना करता है । वस्तुतः प्रार्थना तभी आरम्भ होती है यदि हम प्रभु का धन्यवाद करते हैं और कहते हैं प्राप्त ही पर्याप्त है । किसी भी धार्मिक स्थान पर जाकर मांग करना प्रार्थना नहीं है । जैसे एक हिन्दी कवि के शब्दों में–

उसने मुझे बहुत कुछ दिया ।
परन्तु मैंने उसका धन्यवाद न किया । ।

इसके विपरीत नीचे वाले व्यक्ति तभी खुश होते हैं यदि हम उनसे प्रेम करते हैं । हम देखते हैं कि आज कल घरों में प्रेम बहुत कम दिखाई देता है जैसे एक उर्दू शायर के शब्दों में–

न रही यारों में यारी न भाइयों में वफ़ादारी ।
मुहब्बत उठ गई सारी अज़ब यह दौर आया है । ।

देखिए ! जीवन में तीन बातें सदा याद रखें–

1. जहाँ पर लेना ही लेना होता है वहाँ पर स्वार्थ होता है ।

2. जहाँ पर लेना-देना होता है वहाँ व्यापार होता है ।

3. जहाँ पर केवल देना ही देना होता है वहाँ पर प्रेम होता है । अतः ऐसी कोई समस्या नहीं है जिसका समाधान प्रेम न हो । प्रेम

से सभी को वशीभूत किया जा सकता है। जैसे कबीर ने लिखा है–

पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ पंडित हुआ न कोय।
अढ़ाई अक्षर प्रेम के पढ़े तो पंडित होय।।

जिस घट प्रेम न संचरै सो घट जानु मसान।
जैसे खाल लोहार की, साँस लेत बिन प्रान।।

29. अंग्रेज़ी भाषा में एक कहावत है–

Habits are easy to make but hard to break.

आदतें बनानी तो आसान होती हैं, परन्तु छोड़नी बहुत मुश्किल होती हैं। कहते हैं कि एक कार्य को लगातार 21 दिन तक करते रहने से आदत पड़ जाती है और उसके छोड़ने में 42 दिन लगते हैं अतः हमें अच्छी आदतें डालनी चाहियें और बुरी आदतों से बचना चाहिये जैसे एक हिन्दी कवि के शब्दों में–

बुराइयों को जीवन में लाना नहीं चाहिये।
यह मीठा ज़हर होता है इन्हें अपनाना नहीं चाहिये।।

अब प्रश्न उठता है कि बुरी आदतों को सुधारें कैसे? इन्हें सुधारने के लिए अग्रलिखित उपाय हैं– 1. संकल्प 2. सजगता 3. प्रायश्चितता 4. आत्मसुझाव।

30. **तुलसी इस संसार में भाँति-भाँति के लोग।**
सब से हिलमिल चालिए नदीनाव संयोग।। –तुलसीदास

संसार में मुख्यतः अग्रलिखित 4 प्रकार व्यक्ति होते हैं–

1. शैतान – ये वे व्यक्ति होते हैं जो कहते हैं मेरा तो मेरा और तेरा भी मेरा। वे स्वयं तक ही जीते हैं और उसका जीवन पशु तुल्य होता है। उनके जीवन का मुख्योद्देश्य होता है खाओ, पीयो, मौज उड़ाओ, कल किसने देखा है। जैसे अकबर इलाहाबादी लिखते हैं–

हम क्या कहें हबीब (मित्र) क्या कारे-नुमायाँ (विशेष कार्य) कर गये ।
बी.ए. हुए नौकर हुए पैंशन मिली और मर गये ।।

अधिकतर व्यक्ति इसी प्रकार के होते हैं ।

2. इन्सान – ये वे व्यक्ति होते हैं जो कहते हैं मेरा मेरा और तेरा तेरा । ऐसा व्यक्ति चरित्रवान् होते हैं और विपत्ति में दुःखियों की सहायता भी करते हैं । वे इसे ही प्रभुपूजा मानते हैं । जैसे एक कवि के शब्दों में–

इबादत है दुःखियों की इमदाद करना ।
जो नाशाद है उनका दिल शाद करना ।।
ख़ुदा की नमाज़ और पूजा यही है ।
जो बरबाद है उनको आबाद करना ।।

परन्तु ऐसे व्यक्तियों की संख्या बहुत कम होती है ।

3. संत – ये ऐसे व्यक्ति होते हैं जो कहते हैं तेरा तो तेरा और मेरा भी तेरा । ऐसे व्यक्ति उदारवादी, त्यागी, तपस्वी, चरित्रवान् होते हैं । ऐसे व्यक्ति समझते हैं जिनके पास धन है वह धन्य नहीं है अपितु जिसके पास धर्म है वह धन्य है । जैसे कबीर ने लिखा है–

साधु भूखा भाव का धन का भूखा नाहिं ।
धन का भूखा जो फिरे वह तो साधु नाहिं ।।

परन्तु ऐसे व्यक्तियों की संख्या बहुत ही कम होती है । जैसे आदि शंकराचार्य, संत ज्ञानेश्वर, स्वामी दयानंद, स्वामी विवेकानंद आदि ।

4. परमहंस – ऐसे व्यक्ति वे होते हैं जो कहते हैं–

न तेरा न मेरा यह दुनियाँ रैन बसेरा ।
न घर मेरा, न घर तेरा, चिड़िया रैन बसेरा ।

ऐसे व्यक्ति विरक्त वैरागी और मोहमाया रहित होते हैं । जैसे रामकृष्ण परमहंस, स्वामी रामतीर्थ परमहंस आदि ।

अब आप ही अपने दिल से पूछिए कि आप कौन सी कैटेगरी में आते हैं ।

31. संत का जीवन गाय जैसा होता है न कि हाथी जैसा । क्योंकि गाय घास खाती है इसके बदले में दूध, मक्खन, छाछ, गोबर आदि देती है जब कि हाथी गन्ना, गुड़, पंजीरी, माल आदि खाता है तो भी वह समाज को कुछ नहीं देता या बहुत कम देता है । इसी प्रकार संत भी हल्का और सात्विक भोजन करता है और इसके बदले समाज ज्ञानामृत प्रदान करता है । कहने का भाव यह कि संत समाज से लेता तो अंजलि भर और लौटाता है दरिया भर ।

32. दुनियाँ में अमृत बहुत कम है इसलिये कड़वे घूंट पीने की आदत डालो । सुनने की आदत डालो, कहने वाले कहने से बाज नहीं आयेंगे । यदि आप आँखें ऊपर करके चलेंगे तो लोग कहेंगे कि देखो कितना अकड़ से चलता है । यदि आँखें नीचे करके चलोगे तो लोग कहेंगे देखो, हमारी ओर देखता ही नहीं । यदि आप आँखें इधर-उधर देखकर चलोगे तो कहेंगे कि इसकी आँखों का क्या भरोसा । यदि आँखें बंद करके बैठोगे तो लोग कहेंगे कि कैसा बगला भक्त बैठा है ।

33. मुख्यतः हम सब प के पीछे दौड़ रहे हैं । जैसे पैसा, पत्नी, पति, पुत्र, पुत्री, पद-प्रतिष्ठा आदि । इन की प्राप्ति के बाद हमें क्षणिक सुख तो मिलता है परन्तु आनन्द नहीं । परन्तु हम प्रभु की रजा में राज़ी नहीं रहते हैं इसी कारण दुःखी रहते हैं । यदि हम प्रभुशरण में चले जायें तो वहाँ आनन्द ही आनन्द मिलेगा क्योंकि प्रभु का दूसरा नाम आनन्द है जैसे एक कवि के शब्दों में–

प्रभु प्यारे से जिसका सम्बन्ध है ।
उसे हर पल आनन्द ही आनन्द है ।।

34. बीमारी आती है खरगोश की तरह और जाती है कछुवे की तरह। इसके विपरीत पैसा आता है कछुवे की तरह और जाता है खरगोश की तरह। अतः अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखे ओर धन को सोच विचार के खर्च करें।

35. पच्चीस में क्या घटाएं कि वह पचास हो जाए। पच्चीस के पचास करने के लिये ऊपर की मात्रा हटा दो। वह पच्चीस से पचास हो जायेंगे।

36. अंधे को दर्पण दिखाना व्यर्थ है। गधे को गीत सुनाना व्यर्थ है, सुअर को मिठाई खिलाना व्यर्थ है। सागर में वर्षा होना व्यर्थ है। दिन में दीपक जलाना व्यर्थ है। यदि मन में संतोष एवं शांति न हो तो सब कुछ व्यर्थ है। क्योंकि जीवन में आनन्द संतोष से ही आता है।

37. गुलाब के फूल का सार इत्र है और व्यक्ति के जीवन का सार उसका चरित्र है। चरित्र की सुगंध फैलती है और दुश्चरित्र की दुर्गंध फैलती है। जीते जी हम कांटे चुभोते हैं और लाशों पर हम फूल चढ़ाते हैं। सिकंदरने अंतिम समय में अग्रलिखित 3 इच्छाएं व्यक्त की थीं–

    1. वैद्यों से कहा–मेरा आधा राज्य ले लो और इसके बदले मुझे एक सांस दे दो। परन्तु वैद्यों ने इनकार कर दिया।

    2. ज्योतिषों से कहा मेरा सारा राज्य ले लो और इसके बदले मुझे एक सांस दे दो। परन्तु ज्योतिषियों ने भी इनकार कर दिया।

    3. इस प्रकार सिकंदर ने अंतिम इच्छा प्रकट की कि जब मैं मर जाऊँ मेरी सारी दौलत सड़कों पर बिछा देना और मेरे दोनों हाथ कफ़न से बाहर निकाल देना ताकि लोग कहे कि

सिकंदर संसार से खाली हाथ जा रहा है। जैसे एक उर्दू शायर के शब्दों में–

खाली हाथों यहाँ से सिकंदर गया।
सब खज़ानों की चाबी धरी रह गई।।
वैद्य लुकमान को भी कज़ा खा गई।
यहा ज़िन्दगी का कोई भरोसा नहीं।।

38. बुरी वस्तुओं जैसे विकारों, शराब, जुआ, व्याभिचार आदि का त्याग होता है, ज्ञान का दान किया जाता है और धन का त्याग एवं दान दोनों होते हैं। भोगों में लगाया गया धन मल-मूत्र बन जायेगा, परोपकार में लगाया गया धन दान बन जायेगा और किसी सुपात्र एवं निर्धन व्यक्ति की सहायता में लगाया गया धन प्रभुप्रसाद बन जायेगा।

39. संत के मुख्य गुण है समता-प्रशंसा व निन्दा में समान रहना। संयम, सहनशीलता की भावना, अकिंचनता–स्वयं को कर्त्तापन की भावना से मुक्त रखना ताकि अभिमान की भावना न आये और वैराग्य संसार की मोहमाया से दूर रहना, संसार में बसना न कि फंसना। जैसे तुलसीदास लिखते हैं–

तुलसी जग में यों रहो जैसे रसना मुख माहि।
खाती घी और तेल नित, फिर भी चिकनी नाहिं।।

40. यदि आप को एक घंटे की खुशी चाहिये तो आप झपकी ले लो। यदि एक दिन की खुशी चाहिए तो आप अपने दोस्तों के साथ पिकनिक मना लो। यदि आप को एक महीने की खुशी चाहिये तो विवाह कर लो। यदि एक वर्ष की खुशी चाहिए तो खूब धन सम्पत्ति कमा लो। परन्तु यदि जीवन भर की खुशी चाहिये तो

संतोष, धर्म अध्यात्म का दामन पकड़ कर प्रभुशरण में रहो क्योंकि सच्चा सुख केवल प्रभुशरण में ही है। वस्तुतः मानव जीवन का उद्देश्य है आनन्दप्राप्ति और आनन्द (Bliss) ही प्रभु का पर्यायवाची है।

41. इस संसार में क्या कोई ऐसा वकील है जो मृत्यु के खिलाफ सुप्रीमकोर्ट से स्टे ऑडर ले सके? क्या कोई ऐसा डॉक्टर है जो दवा देकर मृत्यु से बचा सके? क्या कोई ऐसा पहलवान है जो मृत्यु को हरा सके? क्या कोई ऐसा धनी व्यक्ति है जो रिश्वत देकर मृत्यु को खाली हाथ लौटा सके। संसार में ऐसा कोई नहीं है। मुत्यु के सामने सब भिखारी हैं और मृत्यु सब पर भारी। क्योंकि यह अटल है। जैसे उर्दूशायर बिस्मिल सइदी लिखते हैं–

ज़िन्दगी को सम्भाल कर रखिये।
ज़िन्दगी मौत की अमानत है।।

42. बुजुर्गों की संगति करो। क्योंकि उनके चेहरे की एक-एक झूरी पर अनंत अनुभव लिखे होते हैं। उनके कांपते हुए हाथ, हिलती हुई गर्दन, लड़खड़ाते हुए कदम और मुर्झाया चेहरा संदेश देता है कि जो शुभ करना है वह इसी समय कर लो। कल कुछ नहीं कर पाओगे। वृद्ध व्यक्ति इस धरती का सबसे बड़ा शिक्षालय है। क्योंकि उसे देखकर उगते सूर्य की डूबती कहानी का ज्ञान प्राप्त होता है।

43. कोई भी धर्म हो परन्तु सब का धर्मी (परमात्मा) एक ही है। जिसको पौराणिक भाई परमात्मा कहते हैं। आर्य समाजी ओ३म् कहते हैं। बौद्ध उसको शून्य कहते हैं, जैन उसको निरंजन कहते हैं, सिक्ख उसको सतश्री अकाल कहते हैं, अंग्रेज़ उसे गॉड कहते

हैं तो मुसलमान अल्लाह। पारसी उसे अहुरमज्द कहते हैं। लाओत्सी उसे ताओ कहते हैं। वस्तुतः ये सब उसी एक परमात्मा की अपनी-अपनी भाषाओं में रखे हुए विभिन्न नाम हैं। परन्तु संसार के सब व्यक्तियों का परमात्मा केवल एक ही है।

44. भागवत के लेखक का नाम बोपदेव था न कि वेदव्यास जोकि जयदेव के बड़े भाई थे, जिन्होंने गीतगोविन्द की रचना की थी। भागवत में कहीं भी राधा का नाम नहीं आया है। परन्तु महाभारत में दो बार राधा का नाम आया है। एक तो कर्ण की माता का नाम राधा था जिसने कर्ण का पालनपोषण किया था और दूसरे यशोदा के भाई रायण की पत्नी का नाम भी राधा था।

45. पौराणिक भाई कहते हैं कि जब अर्जुन ने जयद्रथ का वध किया तो इससे पूर्व सूर्य को श्रीकृष्ण ने अपनी योगमाया से ढक दिया और अंधेरा छा गया। परन्तु यह सत्य नहीं है। सत्य तो यह है कि भीम, सहदेव और नकुल ने कौरवों से इतना भयंकर युद्ध किया जिसके कारण इतनी अधिक गर्द उठी कि सूर्य दिखाई देना बंद हो गया।

46. प्रत्येक व्यक्ति को अग्रलिखित 4 प्रकार की कृपणता से बचना चाहिए–

(1) विचारों की कृपणता – विचारों में उदारता होनी चाहिए जिसमें उदारता होती है उसका भाव भी उच्च होता है।

(2) शब्दों की कृपणता – अपशब्दों का प्रयोग कभी भी नहीं करना चाहिये। अच्छे शब्दों को छोड़कर घंटियाँ शब्द का प्रयोग करने वाला बनिया कहलाता है। जो व्यक्ति अच्छे शब्दों, मीठे वचनों को छोड़ खोटे वचनों का प्रयोग करते हैं वे मीठे फलों को छोड़कर खट्टे फलों का प्रयोग करते हैं।

(3) समय की कृपणता – अच्छे कार्य के लिये आज व्यक्ति के पास समय नहीं है । आज धन देने वाले बहुत मिल जाते हैं परन्तु समय देने वाले बहुत कम मिलते हैं । समय देना धन देने से भी बड़ा दान होता है क्योंकि धन वापिस आ सकता परन्तु समय वापिस नहीं आ सकता है ।

(4) सम्पत्ति की कृपणता – कंजूस से बड़ा कोई भी दानी नहीं होता है क्योंकि वह बिना हाथ लगाये ही सब कुछ दे जाता है । धन को साधन समझो न कि साध्य ।

47. 5 प्रकार के दीपक होते हैं । उत्साह का दीपक, शांति का दीपक, महानता का दीपक, समृद्धि का दीपक, आशा का दीपक । परन्तु आशा का दीपक जलता रहना चाहिये क्योंकि जब यह दीपक जलता रहेगा तो चारों दीपक को जलाता रहेगा । अतः यह दीपक जलना चाहिये ।

48. (1) पहला आकर्षण चेहरा का होता है । परन्तु यह अधिक समय तक नहीं टिकता है । क्योंकि यह अस्थायी और क्षणभंगुर होता है ।

(2) दूसरा आकर्षण भाषा का होता है । परन्तु यह भी अधिक समय तक नहीं टिकात है क्योंकि यह भी अस्थायी और क्षणभंगुर होता है ।

(3) तीसरा आकर्षण चरित्र एवं व्यवहार का होता है । परन्तु यह स्थायी होता है । इसके अतिरिक्त तलवार की क़ीमत उसकी धार से होती है और व्यक्ति की क़ीमत उसके चरित्र एवं व्यवहार से होती है । क्योंकि चरित्र के अन्तर्गत व्यक्ति

के मुख्यतः विचार, व्यवहार, आहार, स्वभाव, क्रिया, आदतें आदि आ जाते हैं। इसीलिये लोगों पर इसका अधिक प्रभाव पड़ता है। अतः स्वामी विवेकानंद लिखते हैं–

It is character and behaviour that pays everywhere.

चरित्र एवं व्यवहार प्रत्येक स्थान पर प्रभाव डालता है। इसी प्रकार एक हिन्दी कवि के शब्दों में–

निर्धन धनवान् से डरता है। निर्बल बलवान् से डरता है।

मूर्ख विद्वान् से डरता है परन्तु चरित्रवान् से ये तीनों डरते हैं।।

49. तीन प्रकार के पाप होते हैं। पहला पाप है किसी का दिल दुःखाना। जैसे बुल्लेशाह लिखते हैं–

मंदिर ढ़ादे, मस्जिद ढ़ादे, ढ़ादे जो कुछ ढ़ेदा।
पर बुल्लया किसी दा दिल न ढ़ाई दिला विच रब है रहदां।।

अपनों का दिल दुःखाना महापाप है जैसे एक उर्दू शायर ने लिखा है–

ये रिश्ते बड़े अनमोल है, इन्हें खराब न कर।
मेरा हिस्सा भी तू लेले, मगर आंगन में दीवार न कर।।

परन्तु अपने माता-पिता एवं अपनों का दिल दुःखाना बड़ा पाप है। जैसे एक हिन्दी कवि के शब्दों में–

क्या मंदिर क्या मस्जिद क्या गंगा की धार करें?
वह घर स्वर्ग समान है जहाँ संतान माता-पिता का सम्मान करें।।

50. शरीर से हमने भोगों को भोगा। परन्तु यह शरीर आत्मा के जानने लिए मिला था। शरीर से ही व्यक्ति की पहचान होती है। यदि शरीर न होगा तो आत्मा की पहचान न होगी। अतः मानव जीवन शरीर एवं आत्मा का सुन्दर समन्वय है। संत वह है जिसने इंद्रियों

को जीत लिया है और जो मन-वचन-कर्म से एक है जिसकी कथनी-करनी, चर्चा-चर्या, उच्चारण-आचरण में समानता है। इसके विपरीत जिसने शरीर को विषय भोगों में लगा दिया वह संसारी हो गया।

हम मन्दिर अपरिचित से परिचित होने के लिये ही जाते है। मूर्ति से हम परिचित हैं परन्तु आत्मा से अपरिचित है। अतः आत्मज्ञान की प्राप्ति के लिये हम मन्दिर जाते हैं। परन्तु परमात्मा निराकार है अतः वह एक शक्ति है न कि व्यक्ति। अतः उसकी अनुभूति हृदय में ही होती है। क्योंकि हृदय ही ऐसा स्थान है, जहाँ आत्मा-परमात्मा दोनों एक स्थान पर विद्यमान होते हैं। अतः बुल्लेशाह लिखते हैं–

वेद पुराण पढ़ पढ़ थक्के, सजदे कर दियां घस गये मत्थे।
न रब्ब तीरथ न रब्ब मक्के, जिस पाया तिस नूर अनवार।।

(प्रकाशपुंज)

अतः एक उर्दू शायर के शब्दों में–

कौन सी मस्जिद में, किसने ख़ुदा देखा है।
जिसने भी देखा है खुद में छिपा देखा है।

धर्म पाल कपूर

दिनांक : 20-10-2020

(धर्मपाल कपूर)
बी.ए. ऑनर्स, एम.ए.
कोठी नं. 1135, सैक्टर 11,
पंचकूला-134112 (हरियाणा)
फोन : 0172-2567845
मोबाइल : 9356301618
www.dpkapoorbooks.co.in